।। स्वामी को संवाद ।।
मारवाडी + हिन्दी
(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ स्वामी को संवाद लिखंते ||

|| श्लोक ||

संत सुखरामजी स्वामी ने बूजियो ||
सुरता बगता आप ही हुवा ||
स्वामी सिन्यास कहो हो कंहा से आये || देह धर जुग में किण पेल गाये ||
ओऊँ अजपा की किण रीत होई || कहे सुखदेवजी दे भेद मोई ||१||

हे स्वामी सन्यास धर्म कहाँसे आया?व यह सन्यास धर्म मनुष्य देहमे जगतमे सर्व प्रथम किसने धारण किया?ओअम व अजप्पाके साधना की क्या रित है । हे स्वामी यह भेद मुझे दे । ||१||

स्वामी कहे सुणो सुखदेवजी || सिन्यास शिव सूं चल आये ||
देह धर जुग में दत्त पेल गाये || ओऊँ स अजपो सुण वाय होई ||
धर ध्यान न्यारो लखे जन कोई ||२||

स्वामी ने आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज से कहा की धरती पे यह सन्यास धर्म शिवशंकर से कैलास से आया । धरती पे मनुष्य देह से सर्व प्रथम दतात्रय ने धारण किया ओअम व अजप्पा यह पवन की साधना याने श्वास की साधना है । यह पवन याने श्वास ओअम, सोहम,अजप्पा इन तीनो का बना है । ओअम सोहम तथा अजप्पा का साधना साधने की रित न्यारी न्यारी है ।||२||

चोपाई ||

कोण देश में मढी तुमारी || कोण सबद कूं गावो ||
सुखदेव कहे सुणो सामीजी || किसे पंथ कूं ध्यावो ||३||

हे स्वामी तुम्हारी मढी याने रहने का वास कौनसे देश मे है । हे स्वामी तुम किस शब्द को भजते हो । हे स्वामी तुम श्वास शब्दको भजते हो या श्वास के परेके सतशब्द को भजते हो । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने स्वामी को पुछा की तुम किस पंथ पर चलते हो । तुम त्रिगुणी माया इस गृहस्थी पंथ पर चलते हो या सतशब्द इस वैरागी पंथ पर चलते हो ।||३||

दोय पंथ दोय हे गेला || दो नाळा दो बाणी ||
सुखदेव कहे सुणो सामीजी || किसी राह तुम जाणी ||४||

हे स्वामी जगतमे गृहस्थी व वैरागी ऐसे दो पंथ है,तथा गर्भमे आकर आवागमन मे रहनेका तथा गर्भ से मुक्त होनेका आवागमन मे न आनेका ऐसे दो रास्ते है । आदि से दो नाल है । एक संखनाल है याने जहाँ से जगत मे आये वहाँ पहुँचने की नाल है मतलब पहुँचकर फिर से जगत मे आनेकी नाल है दुजी बंकनाल है याने घटमे पश्चीम से उलटकर जगत मे वापीस जन्म न धारने की नाल है । वैसे ही जगत मे दो बाणी है । एक वेद,शास्त्र,पुराण की बावन अक्षरो की मायाकी बाणी है व दुजी सुक्ष्म वेद की बावण

अक्षरो के परे की ने:अंछर की बाणी है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने पुछा की है स्वामी तुमने किस रास्ते को जाणा है ।४।।

केसो पंथ तुमारो कहिये ।। कोण नाळ कूं छेदी ।।
सुखदेव कहे सुणो सामीजी ।। किसे पंथ का भेदी ।।५।।

हे स्वामी तुम्हारा दो माया तथा सतबैराग मे से कौनसा पंथ है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने स्वामी को पुछा की तुमने माया पंथ धारण किया या सतवैराग्य पंथ धारण किया है यह बताओ । तुमने संखनाल छेदन किया या बंकनाल छेदन किया यह बताओ ।।।५।।

कोण तुमारा गुरू गुसांई ।। कोण तुमारो चेलो ।।
सुखदेव कहे सुणो सामीजी ।। कोण संग नित खेलो ।।६।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज स्वामी से बोले की तुमने गुरु गुसाई किसको धारण किया? हे स्वामी तुम्हारा चेला कौन है । हे स्वामी तुम नित्य किसके साथ खेलते है ।।।६।।

सत्त शब्द हे गुरू हमारा ।। चित्त हमारो चेलो ।।
स्वामी कहे सुणो सुखदेवजी ।। मन सुरत संग खेलो ।।७।।

स्वामी ने आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज को कहाँ की मेरा गुरु सतशब्द है व मेरा शिष्य चित्त है । मै मन तथा सुरत के संग नित्य खेलता हुँ ।।।७।।

कोण शब्द सूं उठो बेठो ।। कोण शब्द ले ध्यावो ।।
सुखदे कहे सुणो सामीजी ।। किसे शबद संग गावो ।।८।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने स्वामी को पुछा तु किस शब्द के आधार से नित्य उठते व बैठते हो । तुम किस शब्द ध्यावते हो व किस शब्द के संग गाते हो ।।।८।।

सोऊँ शबद संग ऊठ बेठा ।। राम शबद कूं ध्यावाँ ।।
ओऊँ शबद सूं राग उचारा ।। सुरत सगत संग गावो ।।९।।

स्वामी ने आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजको कहाँ मै नित्य सोहम शब्द के साथ उठते बैठता हुँ व राम शब्द को गाता हुँ तथा ओअम शब्द के संग रागरागीणी का उच्चारण करता हुँ व सुरत शक्ती के साथ गाता हुँ ।।।९।।

कोण पुरूष को ध्यान धरो हो ।। कोण पुरूष कूं मारो ।।
केहे सुखराम सुणो सामीजी ।। कहो कोण कूं तारो ।।१०।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज के स्वामी को पुछा हे स्वामी तुम कौनसे पुरुष का ध्यान धरते हो व कौनसे पुरुष को मारते हो तथा तुम किस पुरुष को तारते हो ।।।१०।।

पार ब्रम्ह को ध्यान धरा हाँ ।। पाँच पुरूष कूं मारा ।।
स्वामी कहे सुणो सुखदेवजी ।। प्राण पुरूष कूं तारा ।।११।।

स्वामी ने आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज को कहाँ की मै पारब्रम्ह पुरुष का ध्यान धरता हुँ व पांच पुरुष को मारता हुँ व प्राण पुरुष को तारता हुँ ।।।११।।

कोण काज तुम भेष पेरियो ।। कोण काज तम मांगो ।।
के सुखदेव सुणो स्वामीजी ।। देह काहि कूं भांगो ।।१२।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने स्वामी से पुछा कि तुमने यह भेष किस कारण से लिया है । व किसलीये मांगते हो तथा इस देह को किसलीये गलाते हो ।।।१२।।

राम काज हम भेष पेरिया ।। खुद्या काज सो मांगाँ ।।
स्वामी कहे सुणो सुखदेवजी ।। मोख काज देह भांगाँ ।।१३।।

स्वामी ने आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज को कहाँ मैने रामजी पानेके लिये भेष धारण किया है व देह को भुख लगती है इसलिये मै मांगता हुँ व मोक्ष के लिये देह को गलाता हुँ ।।।१३।।

किस के काज गोत कुळ छाड़यो ।। कोण काज बन सेवो ।।
के सुखराम सुणो स्वामीजी ।। जाब इसीको देवो ।।१४।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने स्वामीसे पुछा तुमने किस कारण गोत्र का त्याग कर बन का रास्ता धारण किया है यह मुझे बताओ ।।।१४।।

बेहद काज गोत कुळ छाडयो ।। राम काज बन सेवाँ ।।
स्वामी कहे सुणो सुखदेवजी ।। जाब अंत ओ देवाँ ।।१५।।

स्वामीने आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजको कहाँ मैने बेहद के कारण गोत कुल को त्यागा है व रामजी पानेके लिये बन का रास्ता धारण किया है । स्वामी को आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने जो प्रश्न पुछे उस के जबाब देना कठीन पडे तब स्वामी ने आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज को कह दिया कि मै अब आगे आपके किसी प्रश्न का जबाब नही दुंगा यह मेरा आपके प्रश्न का जबाब है यह समज लो ।।।१५।।

दोड़या फिरो जगत के मांही ।। बेण बिधो बिध बोलो ।।
केहे सुखराम सुणो स्वामीजी ।। काहा हेरता डोलो ।।१६।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने स्वामी को कहाँ कि जगत मे इस गॉव से उस गॉव,उस गॉव से आगे का गॉव दौड्ते फिरते हो व अलग अलग ज्ञान बचन बोलते हो तो तुम संसार मे किसे हेरते डोलते हो ।।।१६।।

दोड़या फिरा मन का घाल्या ।। बेण टळण कूं बोला ।।
स्वामी कहे सुणो सुखदेवजी ।। संत हेरता डोला ।।१७।।

स्वामी ने आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज को कहाँ मै मन के लिये दौड्ते रहता हुँ व बचन टालणे के लिये बोलते रहता हुँ तथा संत को ढुंढते फिरता हुँ ।।।१७।।

किस कूं दवा बे दवा देवो ।। किस कूं ग्यान बतावो ।।

केहे सुखदेव सुणो स्वामीजी || चुपक कोण सूं ल्यावो ||१८||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने स्वामी को पुछा कि तुम आशिर्वाद किसे व श्राप किसे देते हो । तुम कब चुप रहते हो व कब बोलते हो |||१८||

जुग कूं दवा बे दवा देवां || मन कूं ग्यान बतावां ||
स्वामी कहे सुणो सुखदेवजी || आपो देख संभावाँ ||१९||

स्वामी ने आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज को कहाँ की मै जगत के लोगो को आशिर्वाद व श्राप दोनो देता हुँ । जो मेरी रित धारण करते उन्हे आशिर्वाद देता हुँ व जो मेरी रित त्यागते उनको श्राप देता हुँ । मै अपने मनको ज्ञान बताता हुँ । मै मेरे ज्ञान की पहुँच देखके मै चुप या बोलते रहता हुँ । मेरे ज्ञान की पहुँचे अधीक है तो बोलता हुँ व ज्ञान की पहुँच कम है तो चुप रहता हुँ |||१९||

कोण तुमारी बेन भाणजी || कोण तुमारी माता ||
के सुखदेव सुणो स्वामीजी || किसे ख्याल रंग राता ||२०||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने पुछा की तुम्हारी बहन,भांजी तथा माता कौन है । तुम किस खेल मे रंगकर लाल मस्त रहते हो |||२०||

सरम हमारी बेन भाणजी || सुता हमारी मांता ||
स्वामी कहे ख्याल शिवरण के || सत्त शब्द सूं राता ||२१||

स्वामी ने आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज को कहाँ की शर्म हमारी बहन भानजी है व सता हमारी माता है । मै सतशब्द के स्मरण करने के खेल रंग मे लाल मस्त हुँ |||२१||

पेरो पगाँ खडाऊँ खासा || जीव कीट कूं पेसो ||
दरगे जाब केहे सुखदेवजी || कहो कूण बिध देसो ||२२||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने स्वामी से कहाँ तुम पैरो मे खडाउँ पहनते हो उससे कई किडे,किटक जीव जन्तु कुचले जाते है,तडफ तडफ के मरते है इसका रामजी के दरगा मे कैसा जबाब दोगे |||२२||

राम नाम हे शिंवरण मेरे || आठ पोहोर निरधारा ||
स्वामी केहे कीट सो कीड़ी || पावे गत्त दवारा ||२३||

स्वामी ने आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज से कहाँ मै रात दिन अष्टो प्रहर राम स्मरण करते रहता व मै मेरे माया के आधार पे न चलते रामजी के आधार पे मेरा बल न पकडते निराधार होकर चलता इसकारण मेरे खडाऊँसे कुचलकर मरे हुये किडे,मकोडे जीवो की गती हो जाती । ||२३||

कैसी ढाल ठाठरी बांधो || को समसेर संभावो ||
के सुखदेव सुणो स्वामीजी || कोण पुरूष शिर बावो ||२४||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज स्वामी को पुछ्ते है कि ढाल,ठाठरी जैसे लढाई मे जाते

वक्त शत्रु पक्षसे बचनेके लिये बाधंते है ऐसे काल से बचने के लिये तुम ढाल,ठाठरी किसकी बांधते हो । जैसे लढाई मे शत्रु को मारने के लिये तलवार रखते है वैसे तुम कालको मारने के लिये कौनसी तलवार रखते हो । तुम तलवार किस पुरुष पर चलाते हो ।।।२४।।

धीरज ढाल ठाठरी बांधा ।। लिव समसेर समावाँ ।।
स्वामी कहे कर्म के ऊपर ।। आ समसेर बुहावाँ ।।२५।।

स्वामी ने आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज को कहाँ मै धीरज की ढाल ठाठरी बांधता हुँ व रामनाम के जीव की तलवार रखता हुँ व यह तलवार कर्म के उपर चलाकर कर्मो को काटता हुँ ।।।२५।।

पंच हथियार जुगत का बांध्या ।। भेष राम को धाऱ्यो ।।
स्वामी केहे सुणो सुखदेवजी ।। हुलस मन ने माऱ्यो ।।२६।।

स्वामी ने आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज को कहाँ की मैने शुरवीर जैसे पांचो हथीयार ओठ ,चोर,नोक,धार,फास,युक्ती से बांधता है वैसे मैने भी पांचो हथीयार युक्ती से बांधे है । जैसे शुरविर भेष धारण करता है ऐसा मैने भी रामजी का भेष धारण किया है । शुरविर जैसे दुष्मनो को मारता है वैसे मै भी भोगी मन को मारता हुँ ।।।२६।।

धूणी मांय जीव सो जाळ्यो ।। नित जळ जाय संतावो ।।
अे शिर करम बंधे नित स्वाँमी ।। केहे सुखदेव भेद बतावो ।।२७।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने स्वामी को कहाँ तुम धुणी लगाते हो उसमे जीव जलकर मरते है व नदीयो मे जाकर न्हाते धोते हो । उसमे भी जीव सताये जाते है इस कारण अनेक तुमारे सिरपर कर्म नित्य बांधे जाते है ऐसे पापकर्म न लगने का तुमारे पास क्या उपाय है । ।।२७।।

जळ की देह जळ की काया ।। जीव जळी का होई ।।
स्वामी केहे भजन के नेडा ।। पाप न आवे कोई ।।२८।।

स्वामी आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज से बोला यह देह,यह काया,पानी से बनी है व जल के जीव भी पानी से बने है व मै रामजी का स्मरण करता हुँ इसलिये जलकर मरनेवाले जीवोका तथा पानी मे सताये जानेवाले जीवो का पाप मेरे स्मरण के कृपासे मेरे नजदीक भी नही आते इसलिये ये पापकर्म मुझे नही लगते ।।।२८।।

आवो स्वाँमी राम राम हे ।। प्रेम प्रीत को भाई ।।
के सुखदेव त्रिगुटी लंगिया ।। बैठ बराबर आई ।।२९।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने स्वामी से कहाँ की हे स्वामी मेरा प्रेम प्रिती पुर्वक राम राम स्वीकारो हे स्वामी राम राम कर तुम घटमे उलटकर त्रिगुटी उलघण किये हो तो तुम मेरे बराबरी के हो इसलिये तुम निचे न बैठते मेरे बराबर आकर बैठो ।।।२९।।

पूरब दिस चडया जे ऊँचा ।। खेच पवन कूं सोई ।।
तो सुखदेव कहे स्वॉमीजी ।। देश मिले नहीं कोई ।।३०।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले हे स्वामी तुम पुर्व दिशासे पवन खीच खीचकर उंचे भृगुटी मे चढे हो तो मेरा व तुम्हारा देश अलग है एक नही है इसलिये देश की बाते मिलेगी नही । तुम्हारा जगत मे गर्भ मे आने का रास्ता है तो मेरा गर्भ से छुटकर अमरलोक जानेका रास्ता है ।।।३०।।

देश मिल्याँ बिन चरचा सूं ।। कीयाँ सुख नहीं पावो ।।
ताते कहे सुणो सुखदेवजी ।। जीम उलट घर जावो ।।३१।।

मेरे तुम्हारे अलग अलग देश तो रहने से देश नही मिलेंगे । इसकारण अमर देश की चर्चा करने पे तुम्हे सुख नही मिलेंगा । इसलिये स्वामी तुम्हसे मै निवेदन करता हुँ कि तुम भोजन करके वापीस तुम्हारे घर पधारो ।।।३१।।

दसवे द्वार पूतिया सामी ।। तो तम गुरूं हमारा ।।
केहे सुखदेव ढोलिये आवो ।। मै हुँ शिष तुमारा ।।३२।।

हे स्वामी तुम दसवेद्वार पहुँचे हो तो तुम मेरे गुरु हो । मेरे गुरु होनेके कारण तुम पलंगपर आकर बैठो व मै आपका शिष्य होने कारण पलंग के निचे बैठता हुँ ।।।३२।।

अनहद लांघ लंघीजे बारी ।। तो पर दिखणा देऊँ ।।
के सुखदेव सुणो स्वामीजी ।। नी तर शिष कर लेऊँ ।।३३।।

अनहद लांघकर याने दसवेद्वार की वारी लांघकर दसवेद्वार के परे पहुँचे हो तो मै आपको प्रदक्षिणा देता हुँ । अगर आपने दसवेद्वार नही खोला है दसवेद्वार नही पहुँचे हो,त्रिगुटी नही लांघी हो तो हे स्वामी तुम मेरे शिष्य बन जाओ । मै तुम्हे शिष्य कर त्रिगुटी लघांकर दसवेद्वार के परे पहुँचा दुंगा ।।।३३।।

सीखी बात आगली कहोगा ।। यारे करू न कोई ।।
के सुखदेव तुमारे घर हे ।। सो बिध कहो बजाई ।।३४।।

तुम यदी पहले हुयेवे संतो की बाते सिखकर मुझे बताओंगे तो वे बाते मुझे कबूल नही होती । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज स्वामी को बोले जो बाते तुम्हारे घटमे बिती है वे बाते सिर्फ मुझे बताओ ।।।३४।।

ज्याँरे घरे अणंद धन हुवा ।। त्याँ सुख पाया सोई ।।
के सुखदेव बखाण्या लारे ।। काहा मिलेगा तोई ।।३५।।

जिनके घर आनंद धन हुआ उन्हीको आनंद धन का सुख मिला दुजो को नही मिलता मतलब बतानेवालोको नही मिलता इसलिये यदि तुम पहले हुये संतोका आनंद धन बताओगे तो तुम्हे तुम्हारे घटमे आनंद कैसे मिलेगा ।।।३५।।

त्रिगुटी लग शिष हे मेरा ।। बारी लंघे स भाई ।।

के सुखदेव सुणो सामीजी ।। दसवे गुरू सहाई ।।३६।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने स्वामी को कहाँ की अगर तुम त्रिगुटी तक पहुँचे हो तो तुम मेरे शिष्य हो व त्रिगुटी की बारी लघंकर त्रिगुटी के आगे पहुँचे हो तो मेरे गुरु भाई हो व दसवेद्वार पहुँचे हो तो मेरे गुरुसमान मेरे गुरु हो ।।।३६।।

ध्यान शबद की सब की मत मे ।। जे समझत हो नाही ।।
के सुखदेव रीस नहिं स्वांमी ।। बेस ओट ले जावी ।।३७।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज स्वामी को कहते है सतशब्द ध्यान की हिकमत नही जाणते हो तो स्वामी क्रोध मत लाओ व अभीतक मेरे साथ बराबरी के बनकर बैठे थे अब बराबरी के नही हो इसलिये उठ जाओ व वापीस अपने घर जाओ ।।।३७।।

जे तम अड़ो ग्यान ले सामी ।। तो बलहारी लेऊँ ।।
के सुखदेव गुरू होय जासो ।। काय शिष कर देऊँ ।।३८।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज स्वामी को बोले अगर तुम मेरे पास जो ग्यान है उसके उपर का ज्ञान बताकर मुझे ज्ञानसे अडाओगे तो मै तुम्हारे पे मेरा प्राण न्योछावर कर दुंगा व तुम्हे मेरा गुरु बना लुंगा । अगर तुम मुझे मेरे से उपरका ज्ञान नही बता सकते व मुझे सतज्ञान मे नही अटका सकते हो व मेरे ज्ञानसे चर्चा मे अटक जाते हो तो तुम मेरा शिष्य बन जाओ मै तुम्हे शिष्य कर लुंगा ।।।३८।।

ग्यानी सो हे शिष हमारा ।। भेदी सो गुरू भाई ।।
के सुखदेव अग्यानी जुग मे ।। ज्याँरी कहुँ न काई ।।३९।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने स्वामी को कहाँ की जो सतस्वरुप का सतग्यान जाणता है परंतु उसके घटमे सतज्ञान का भेद प्रगट नही हुआ है वह मेरा शिष्य है । व जिसके घटमे सतज्ञान का भेद प्रत्यक्ष प्रगट हुआ है व मेरा गुरु भाई है व जीसको सतज्ञान का भेद मालूम नही है सतज्ञान मालूम नही है व फिरभी सतज्ञान से अड्ता है विवाद करता है वह जगत मे अज्ञानी है उनके अज्ञानता को मै कुछ नही कर सकता ।।।३९।।

ग्यानी मिल्याँ ग्यान मैं देऊँ ।। भेदी कूं समजाऊँ ।।
के सुखदेव अग्यानी आगे ।। हाथ जोड़ मै आऊँ ।।४०।।

ग्यानी मिला तो मै उसे के घटमे सतज्ञान कैसे प्रगट करना इसका भेद दुंगा,भेदी मिला तो मै उसे वह घटमे जहाँ पहुँचा है उसके परे पहुँचने का भेद समजाऊंगा व जो अज्ञानी है जो सतस्वरुप का ज्ञान समजाया तो भी समज नही सकता उलटा सतस्वरुप के सतज्ञान को उथापता ऐसे अग्यानी के आगे चर्चा करनेके लिये चर्चा करके विवाद होवे इसलिये मै उनके आगे हाथ जोड्कर ही आऊंगा ।।।४०।।

देही पेल काहा था स्वामी ।। कोण गेल होयं आया ।।

के सुखदेव अरथ ओ दिजे ।। काय शिष होय भाया ।।४१।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने स्वामीको पुछा की यह जगतमे प्रथम देह धारणेके पहले तुमारा जीव कहाँ था व उस देशसे किस रास्ते से जगत मे आये यह अरथ बताओ नही तो मेरा शिष्य हो जाओ ।।।४१।।

जुग में फिरो डोलता स्वामी ।। ग्यान जगत कूं दीया ।।
के सुखदेव नाँव तम लेवो ।। तको काहां कहाँ कीया ।।४२।।

हे स्वामी तुम संसार मे संसारी लोगो को ग्यान देते भटकते फिरते हो व नाम धारण करने का बताते हो वह नाम जो जगत के लोगोको धारन करने बताते हो व तुम भी लेते हो वह नाम कहाँ से आया व कहाँ पहुँचाता यह बताओ ।।।४२।।

संत सुखरामजी स्वामी सूं चरचा कीवी अरथ उत्तर आपही कीया ।।

साखी ।।

राम राम सब मान करीज्यो ।। हर जन आया द्वारे ।।
के सुखराम रीज तो लेणी ।। भाव भगत के सारे ।।४३।।

इसके आगे आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने स्वामी से प्रश्न किये परंतु उत्तर स्वामी से न लेते आपने ही दिये हरीजन अपने घटपे पधारणे पे सभी ने उनका उच्च कोटीका सन्मान करना चाहीये एवम् व उनसे प्रेम भाव कर उनसे भक्ती का इनाम लेना चाहिये ।।।४३।।

शिष की दशा तके तो चरणा ।। आण लगो सब लोई ।।
के सुखराम तत्त हे ऊँचा ।। सो कोइ निवो न मोई ।।४४।।

जो लोग शिष्य के दशामे है वे सभी लोग उनके चरणा लगना चाहिये परंतु जो संत उन संत से उच्च तत्त के है वे कोई भी उनके चरणा ना पडे ।।।४४।।

निचे तत्त रहया जो बैठा ।। तो बुडोगा बातां ।।
के सुखराम समझ कर रहियो ।। गोळो मिलेगा जातां ।।४५।।

जो लोग उनसे निचे तत्त के है वे अगर अपने मन से ही उस संत के समान बनके रहकर उनके साथ बैठेंगे तो वे बक्षीस मे उन से कुछे नही पायेंगे उलटा दोष बांधेगे ।।।४५।।

त्रिगुटी लग वास हे तेरा ।। तो तळ ऊपर आवो ।।
के सुखराम अहुँ धर बैठा ।। दरगा दाद न पावो ।।४६।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले जीस संत का घटमे त्रिगुटी तक वास है वे संत निचे न बैठते मेरे साथ मेरे बराबरी मे खटीया पर बैठो । यदि तुम त्रिगुटी मे पहुँचे नही हो अहम भाव मे आकर मेरे बराबर मे आकर बैठोगे तो तुम्हे दरगा मे दाद नही मिलेगी ।।।४६।।

ऊँचे तत्त उताऱ्याँ दोसण ।। कम तत रे सो बेठा ।।
के सुखराम न्याँव सूं रेणा ।। देख राज की पैठा ।।४७।।

जैसे उंचे तत्त के संत को अपने पास से निचे उतरवाने मे जितना दोष है उतना ही दोष मेरी अपेक्षा कम तत्तवाला मेरे पास बैठा रहा तो उसे दोष है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले यह दोष न्याय से समजो व वैसे सभी रहो । जैसे राजा के अपेक्षा हलका मनुष्य याने प्रजा राजा के बराबर नही बैठ सकता उसे दोष लगता तथा राजा से उचा बादशाह उसे राजा निचे नही उतार सकता उसमे राजा को दोष लगता ऐसे संतोके लिये भी दोष की विधी दरगा से बनी है ।।।४७।।

नीचे तत्त ढोलिये बैसे ।। ऊँच तत्त तळ आई ।।
के सुखराम दोस हे वा कूं ।। कहे संत सब भाई ।।४८।।

यदि निचे के तत्तका संत उचे तत्त के संतके बराबरी मे पलंग पर आकर बैठेगा और उंचे तत्त के संत को निचे बैठाएगा तो बराबरी मे बैठनेवाले को संत को और निचे बैठाने वाले संत को ऐसे दोनो को भी दोष लगता है ऐसा सभी संत भाई कहते है ।।।४८।।

हरजन मिल्याँ पारखाँ कीजे ।। साख सबद को बाणी ।।
आ मनवार कहे सुखदेवजी ।। बोलो तत्त पिछाणी ।।४९।।

हरीजन मिलनेपे उनकी परिक्षा करो और उनके मुख से साखी शब्द और बाणी वे सुणानेका आग्रह करो और उनका तत्तसार पहचाण कर उन्हें वैसे आदर से रखो ।।।४९।।

दरगे दाद साच सूं पासो ।। झूठ कहयाँ हर खीजे ।।
के सुखराम जहाँ लग पूगा ।। सोई जाब सत्त दीजे ।।५०।।

हरके दरगा मे सत्य जबाब देने से हरसे दाद मिलती है तो झुठा कहने से हर चिढता है । इसलिये तुम जहाँ पहुँचे हो वह सत्य सत्य जबाब दो झुटा मत बोलो ।।।५०।।

साधाँ कहो सेनाणी वा की ।। मै बुजण कूं आया ।।
के सुखराम ढोलियो छाडो ।। काय अरथ दे भाया ।।५१।।

स्वामी तुम दसवेद्वार पहुँचे हो इसकी क्या निशाणी है यह जो मै पुछ रहा हुँ इसका अर्थ याने जबाब दो । जबाब नही देते आता तो पलंग पर से उतरकर निचे बैठो ।।।५१।।

गुरू मुख होय ग्यान जो माना ।। समज सोच रे भाई ।।
के सुखराम अरथ सो दीजे ।। काय बेस तळ आई ।।५२।।

तुम गुरु के सन्मुख होकर गुरु के ज्ञान से समजकर विचार करके मुझे बताओ । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले एक तो मै पुछ्ता हुँ उस बात का अर्थ दो या निचे उतरकर बैठो । ।।५२।।

मै बूजूं तुम कहो उचारी ।। तुम बूजो मैं भाखूं ।।
के सुखराम मिल्या से मूंडे ।। भरम काहे को राखूं ।।५३।।

मै पुछ्ता हुँ उसका उत्तर नही आता हो तो तुम पुछो मै उत्तर देता हुँ । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले हम आमने सामने मिले है फिर जरासा भी भ्रम किसलीये रखे ।

।।५३।।

बोलो सत उचारो बाणी ।। अहुँ भाव कूं छाड़ो ।।
के सुखराम साध सूं मिलियाँ ।। कुबध रांड कूं काड़ो ।।५४।।

सत्य बोलो और बाणी का उच्चारण करो व साधु से मिलणे पे अहम याने बड़प्पन का भाव छोड़ते कुबुध्दी रांड को निकाल डालो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।।५४।।

हंस हंस मिलो करोनी चरचा ।। हम आवाँ तम पासे ।।
के सुखराम पेप को क्या गुण ।। छेडया नेक न बासे ।।५५।।

साधु मिलनेपे हस हस के चर्चा करनी चाहीये । तुम चाहते हो तो मै तुम्हारे पास चर्चा करने आता हुँ । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले फुल का क्या गुण है । फुल को छेड़ा,फुल से खुशबु नही फैलती,तो उसे फुल कहके क्या उपयोग? ।।५५।।

हरजन चाल जना के आया ।। आ मनवार करीजे ।।
के सुखराम भाव सो बाणी ।। अन जळ आण धरीजे ।।५६।।

हरीजन चलकर घरपे आये हो तो उनको सतज्ञान सुणाने की मनवार करो उनसे भाव लाओ उनसे मिठी मिठी बाणी बोलो व अन्न व पाणी ग्रहण करने की मनवार करो ।।।५६।।

चरचा मांही पख नहिं लीजे ।। ग्यान करे सो केणा ।।
के सुखराम न्याव सो चोड़े ।। पकड़ खाट तळ देणा ।।५७।।

चर्चा करनेमे पक्षपात मत लो जो सतज्ञान कहता वैसाही बोलो उसमे अंतर मत करो,न्याय की सारी बाते स्पष्ट रुप से खूली खुली करो व सतज्ञान मे बाधा लानेवाले कपट को खटीया के निचे दबाओ ।।।५७।।

दास भाव सारो कर लीजे ।। निवणं खिवण सूं रेणा ।।
के सुखराम बेस चरचा मे ।। पखे बेण नहिं केणा ।।५८।।

घरपे आऐ हुये हरीजन से सर्वप्रकारसे दास भाव से रहो । नम्रता से रहो । खिवण याने उनके ज्ञान शब्द सहो । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले उनके साथ चर्चा मे बैठो परंतु पक्षपात के वाक्य मत बोलो सतन्याय से बोलो व सतन्याय से समजो ।।।५८।।

चरचा माँय लाटियाँ आवे ।। तोहि राम नहि कोपे ।।
के सुखराम भगत हे मेरी ।। संत सूर पग रोपे ।।५९।।

सतज्ञान की चर्चा करने मे लाठीयाँ भी चल गई याने मारपीट भी हो गई तो भी रामजी नाराज नही होते मतलब कोपते नही । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले मेरी भक्ती शुरविरोकी भक्ती है कायरो की भक्ती नही है । इसमे मेरे भक्ती मे शुरविर ही पैर रोपेगे दुजे नही रोपेगे ।।।५९।।

देवे भेद कसर सो काढे ।। आप कढाई भाई ।।
के सुखराम संत सो सूरां ।। भोळ रखे नहिं मांही ।।६०।।

भक्ती का भेद देकर भक्ती धारण लेनेवाले की सभी कसर दुर करो व भक्ती के नियम अनुसार उच्च संतो के साथ बैठकर खुद भी कसर निकालो । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि जो संत अपने अंदर का भोलापन रखता नही वही संत शुरविर है यह सतज्ञान से समजो ।।।६०।।

।। इति स्वामी को संवाद संपूरण ।।